अब महंगी पड़ेगी बिजली चोरी

बिजली चोरी करना अब लोगों को भारी पड़ेगा। जी हां अगर किसी ने बिजली चोरी की या मीटर से छेड़-छाड़ की तो घर में लगे बिजली का मीटर ही बता देगा कि कितनी बिजली चोरी हुई या कैसे मीटर के साथ छेड़-छाड़ की गई। बिजली चुराने के कई तरीके अपनाए जाते हैं अब वे सब उल्टा पड़ेंगे।

चुम्बक लगाकर मीटर की गति रोकने के कई मामले भी पकड़े गए हैं। इसका काट भी विद्युत मंडल ने ढूंढ लिया है। अब चुंबक लगाया तो मीटर तेज दौड़ेगा।

इलेक्ट्रानिक मीटर ही अब चोरी पकड़ेगा। विद्युत मंडल ने इस की माकूल व्यवस्था की है। नए इलेक्ट्रॉनिक मीटर के सर्किट में एक सेंसर लगा है, जो सारी गतिविधियों को रिकार्ड करता है। अगर मीटर बंद करते हैं या उसमें कोई करामात करते हैं तो भी वह मीटर बता देगा कि कितने देर तक मीटर को बंद रखा गया। और क्या-क्या करामात की गई।

***मीटर ही बताएगा-कितनी चोरी हुई**
***मैग्नेट लगाया तो तेज दौड़ेगा मीटर**

बिजली कम्पनी जो नया मीटर लेकर आया है, उसमें हर कुछ उल्टा होगा।

इलेक्ट्रॉनिक मीटर में चुंबक रखकर बिजली चोरी करने के मामले सामने आए हैं। मैग्नेट रखने से मीटर की गतिथम जाती है। अब अगर आपने मैग्नेट रखा तो मीटर की गति थमने के बजाय तेज हो जाएगी। विद्युत वितरण कम्पनी के अधीक्षण यंत्री एमएस अत्रे ने नए मीटर तमाम गुण बताए। उन्होंने बताया कि मीटर के इलेक्ट्रॉनिक सर्किट में एक सेंसर लगा है जो सारी गतिविधियों को रिकॉर्ड करता है। उपभोक्ता कितने लोड का इस्तेमाल कर रहा है और परिसर में कितना वोल्टेज और करंट सप्लाई हो रहा है। यह भी मीटर में दर्ज हो जाता है। मीटर के सर्किट में यदि छेड़-छाड़ की कोशिश होती है, तो वह भी दर्ज हो जाता है। मीटर में दर्ज रिकॉर्ड का एमआरआई किया जाता है और उसे कंप्यूटर पर डाउनलोड करके देखा जा सकता है। हाल में इस तकनीक से बिजली चोरी खासतौर से चुंबक के इस्तेमाल के कुछ मामले पकड़े जा चुके हैं।

श्री अत्रे ने बताया कि इन दिनों नए कनेक्शन में यह मीटर लगाए जा रहे हैं। इसके अलावा जिन परिसर में खराब मीटर बदले जा रहे हैं, वहां भी यही मीटर स्थापित किए जा रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार शहर में अब तक करीब पांच हजार मीटर लगाए जा चुके हैं।

पहले पेज से जारी...

राज्यपाल बनाकर छत्तीसगढ़ से बाहर करने की साजिश

जाहिर है कि वे इसके लिए भी जोगी सरकार की नीतियों को ही कारण मानते होंगे। तब प्रश्न यह है कि जो आदिवासी नेता अपने गृह राज्य के आदिवासियों को कांग्रेस के आकर्षण में बांधकर नहीं रख सका, वह झारखंड के आदिवासियों को कैसे लुभा सकता है। यदि जोगी से झारखंड में चुनावी सेवायें लेना ही है तो इसके लिए उन्हें वहां स्टार प्रचारक बनाया जा सकता है, आखिर वे राजभवन में बैठकर तो कांग्रेस की खातिर आदिवासियों को प्रभावित नहीं कर सकते। दरअसल इस सबके पीछे सोच यह है कि यदि झारखंड में पार्टी के भले के नाम पर जोगी को वहां के राजभवन में समेट दिया जाये तो वे छत्तीसगढ़ में 2013 में होने वाले विधानसभा चुनाव के समय मुख्यमंत्री पद की दावेदारी ठोंकने यहां नहीं आ सकेंगे। इस बीच उनके समर्थक विधायकों की फौज का या तो मानस बदला जा सकता है या फिर उन्हें कमजोर किया जा सकता है। समर्थक विधायकों की असल ताकत जोगी ही हैं और इन विधायकों के जरिये जोगी छत्तीसगढ़ में कांग्रेसी शक्तिमान बने हुए हैं। विधानसभा चुनाव में हार के लिए उनके विरोधियों ने उन्हें ही जिम्मेदार ठहरा दिया जबकि उनके समर्थक प्रत्याशी बहुतायत में विधायक बने। लोकसभा चुनाव में भी पार्टी की हार का ठीकरा जोगी के सिर पर फोड़ने की कोशिशों के साथ तर्क यह है कि उन्हीं की व्यूहरचना में फंसकर कांग्रेस के हाथ खाली रह गये। यदि उनकी सिफारिशों पर ध्यान न देकर टिकट वितरण में सामंजस्य बैठाया गया होता तो एक ही सीट पर संतुष्ट न होना पड़ता। विरोधी तो यह भी समझाना चाहते है।

चेयरमैनों की नियुक्ति की कवायद तेज हुई

भोपाल। केन्द्रीय शिक्षण संस्थानों में चेयरमैनों की नियुक्ति की कवायद केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के गठन के बाद तेज हो गई है। चेयरमैन बनने के लिए कई नेता जोर-आजमाइश में लगे हुए हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय में प्रदेश के कई नेताओं की सूची बड़े-बड़े नेताओं के माध्यम से भेजी गई है। उक्त संस्थानों में पदस्थ पूर्वमानव संसाधन विकास मंत्रालय के मंत्री द्वारा नियुक्त किए गए अध्यक्षों की धड़कनें तब से और तेज हो गई हैं, जब से यूजीसी के चेयरमैन पर करोड़ों के घोटाले का आरोप लगाया गया है। प्रदेश के कई शिक्षण संस्थानों में अध्यक्ष की नए सिरे से नियुक्ति होना है। अध्यक्षों की नियुक्ति के लिए यहां के नेता दिल्ली दौड़ लगाने लगे हैं। चेयरमैन पद के कुछ दावेदारों की सूची बड़े-बड़े नेताओं के माध्यम से राष्ट्रीय कांग्रेस कार्यालय और मानव संसाधन विकास मंत्री कपिल सिब्बल के पास भेजी गई है। बताया जाता है कि इस सूची में कई सेवानिवृत्त अधिकारियों और प्राध्यापकों के भी नाम शुमार किए गए हैं। हालांकि अभी तक कई संस्थाओं में वही चेयरमैन काम कर रहे हैं, जो पूर्व केंद्रीय मंत्री द्वारा किए गए थे। बताया जाता है कि श्री सिब्बल नए सिरे से मानव संसाधन विकास मंत्रालय में व्यवस्था बनाना चाहते हैं। इसलिए नई नियुक्तियां भी तय हैं।

बैंक कर्जे पर स्टाम्प शुल्क की मार से उद्योग बेहाल

भोपाल । मप्र शासन द्वारा बैंक से ऋण लेने पर काफी महंगी स्टाम्प ड्यूटी उद्योगों एवं व्यापारियों से वसूली जाती हैं। जिसके कारण मप्र के उद्योगों पर दोहरी मार पड़ रही हैं। जमीन, दुकान इत्यादि लेने और रजिस्ट्री कराने पर सबसे ज्यादा महंगी स्टाम्प ड्यूटी मप्र में है। इसके बाद उद्योग अपनी जरूरतों के लिए बैंक से कर्जा लेते हैं, तो उन्हें लाखों रुपया स्टाम्प ड्यूटी के रूप में अलग से चुकाना पड़ता है। जिसके कारण पिछले 5 वर्षो में मप्र के उद्योगों की हालत काफी पतली हो गई है। मंदी के इस दौर में उद्योगों एवं व्यापारियों की हालत और खराब हो रही है। पिछले 5 वर्षो में मप्र में काफी बड़ी संख्या में लघु एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग बंद हो चुके हैं।

दलाली की कमाई से पावर प्लांट लगाने की तैयारी

भोपाल । पिछले एक दशक में बिजली की दलाली का धंधा करने वाले अदानी अब तेजी से पावर प्लांट लगाने की तैयारी मे जुटे हैं। दलाली के धंधे में अरबों रूपयों की कमाई कर चुके अदानी बंधु अब मप्र 1320 मेगावाट का पावर प्लांट लगाने की तैयारी में जुट गए है। उल्लेखनीय है कि पिछले 5 वर्षों मे मप्र की विद्युत कंपनियों ने अरबों की रूपया अदानी समूह के माध्यम से खरीदी है। इस समूह को लेकर इन दिनों प्रदेश में राजशाही और नौकरशाही के बीच तरह-तरह की चर्चायें व्याप्त हैं। बिजली उत्पादन के क्षेत्र अदानी समूह मध्यप्रदेश 1320 मेगावाट क्षमता का पॉवर प्लांट लगाने का इच्छुक है। राज्य शासन को इस संबंध मे आग्रह पत्र देने के बाद समूह के अध्यक्ष गौतम एस. अदानी ने यहां मंत्रालय मे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा मुख्य सचिव एवं राज्य बिजली बोर्ड के अध्यक्ष राकेश साहनी से मुलाकात की है। इस मुलाकात के बाद अटकलों का नया दौर शुरू हो गया।

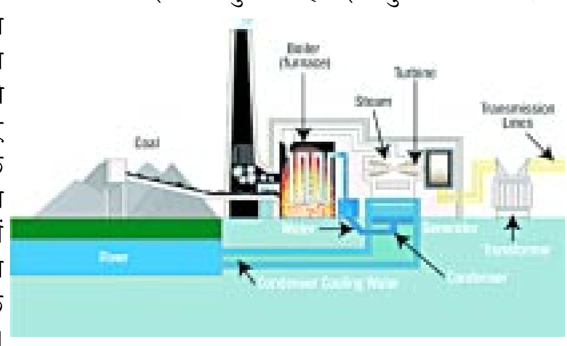

मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक अदानी समूह ने इसी हफ्ते राज्य शासन को आग्रह पत्र दिया था। जिसमें 660-660 मेगावाट की दो विद्युत उत्पादन इकाईयां लगाने की आशा जताई है। मप्र में यह समूह छिंदवाड़ा, बैतूल या बालाघाट जिले में करीब तीन हजार करोड़ रुपए का निवेश करना चाह रहा है। उल्लेखनीय है कि पिछले एक दशक में बिजली की दलाली कर अरबों रूपया कमाने के लिए देश में कई पहचान बनाई है।

महत्वाकांक्षा में मरीज हो जाने का सदमा

चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

भाजपा में हार के बाद इन दिनों मंथन नहीं कलह चल रही है. नैतिक मूल्यों के आधारित तत्वों से पहचान बनाने वाली भारतीय लोकतंत्र की दूसरी सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी का अंदरुनी मानस उसके चरित्र से मेल नहीं खा रहा है.जो कुछ भाजपा के भीतर इन दिनों चल रहा है वह आर एस एस के लिए नई चुनौती है, क्योंकि उसके लगाए बरसों पुराने पेड़ों पर बीमारियां लग गई है. बात आड़वाणी के अघोषित प्रवक्ता सुधींद्र कुलकर्णी की हो या जसवंत सिंह जैसे कंधार हीरो (?) की ,भीतर से शुरु हुई बीमारी खाज की तरह अब सतह पर दिखने लगी है.

बीमारी, दरअसल सजीव-निर्जीव की तात्विक कमजोरी है.जब सजीव शरीर अपनी ताकत खोने लगता है तो बीमारियां जड़ लेती है और निर्जीव की जब देख-रेख नहीं होती तो वह सड़ने लगती है. भाजपा इन दिनों दोनों से जूझ रही है क्योंकि उसमें जीवटता की कमी हो गई है.

जीवटता एक ताकत है जो भीतर से स्वस्फूर्त रख कर रचनात्मकता बनाए रखती है. इससे ही नई सोच-विचार का निर्माण होता है. भाजपा चुनाव में हार के बाद अपनी धारा के आत्म मंथन में नहीं लगी और नई राजनैतिक चुनौतियों पर विमर्श की बजाए अपनी अपनी कुंठाओं को जागृत कर उस जीवटता को खो दिया जिसे उसने दो सांसदों की गईबीती स्थिति से स्वयं को 180 तक पहुंचाया था. उसे अपनी नियती से दो सौ पार जाना था पर उसके भीतर के ही लोगों की नीयत खराब हो गई, गुट बनने लगे अंदर ही अंदर फुटाव के हथौड़े भी चलने लगे.यह वह समय था जब भारत शाइन कर रहा था. एक नए भारत के उदय में प्रमोद महाजन जैसे नवनेता उदित हो गए. भाजपा का जो कमल खिल रहा था उसके सतह की कीचड़ धीरे-धीरे ऊपर आ गई नतीजा खिलता कमल 2004 में अपनी ही कीचड़ से धूमिल हो गया और साथ में अटलबिहारी वाजपेयी जैसे महानेता का राजनैतिक अस्तित्व रसातल में चला गया. अब 2009 में 'पीएम इन वेटिंग' के नारों से भाजपा के विपक्षी दलों को जितनी तकलीफ नहीं हुई उससे अधिक कुंठा और मनमुटाव की बेतरह बीमारियां भीतर से शुरु होकर चुनाव परिणाम तक बाहर आ गई. इसमें फिर बहाने चाहे जो हों पर जसवंत, अरुण जेटली, राजनाथ,कलराज मिश्र, मुरली मनोहर जोशी, नरेंद्र मोदी, राजीव प्रताप रुडी,प्यारेलाल खंडेलवाल या घर से बाहर उमा भारती हो सबने अपनी तलवारें सेनापति होनें के लिए निकाली है.

सेनापति वह ओहदा है जो युद्ध कौशल की वजह से मिलता है. उसमें जीवटता और विश्वास नजर आता है. भाजपा के भीतर आड़वाणी के बाद कौन की यह अंदरुनी लड़ाई है जो सेनापति होने की अपनी जमीन तैयार कर रहे हैं पर उनमें जीवटता और विश्वास कहीं नहीं है. अपनी ही कमजोरी को छुपाने के लिए भाजपा नेता तलवारें भांज रहे है और इससे भीतर से विभक्त होकर गुट ज्यादा पनप रहे है. दरअसल यह महत्वाकांक्षा में मरीज हो जाने का सदमा है जो भाजपा को लगा है.

महत्वाकांक्षा के ये बीज आरएसएस ने नैतिक संस्कारों के साथ लगाए थे लेकिन उसके तैयार किये बरगदी वृक्षों से नैतिक संस्कारों के तत्व फल नहीं बन सके और महत्वाकांक्षा के अतिरेक से बीमारी के कमजोर लक्षण ज्यादा पनप गए. बहरहाल भाजपा महत्वाकांक्षा में मरीज हो जाने के सदमें है और उसकी पैतृक संस्था संघ के लिए यह एक चुनौती है.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८